स्त्री विमर्श : हिन्दी साहित्य में महिलाओं का चित्रण

अमिता प्रशांत कारंडे शोधछात्र हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हाप (apkarane87@gmail.com)

शोधसार –

स्त्री पुरुष दोनों भी समाज के अंग होते हैं| दोनों के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती| समाज रूपी रथ के यह दो पहिये है और यह दोंनो समाज को आगे बढ़ाने का काम करते है| समाज में स्त्री प्रायः समाज की दुसरे दर्जे की नागरिक मानी जाती है| 'स्त्री-विमर्श' एक ऐसा लेखन है या विचार धारा है जिसमें समाज की स्त्री के बारें में गहराई से सोचने के लिए विवश किया है| स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्री शोषण,धमन, उत्पीड़न की बातें सामने आ रही है| समाज की पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को केवल उपभोग की वस्तु माना है| पुरुष अत्याचार के विरुद्ध नारी मुक्ति के लिए अनेक देशों में आंदोलन हुए है|

बीज शब्द – विमर्श, धमन, उत्पीड़न,आकांक्षा, शृंखला |

मूल आलेख –

नारी से जुड़ा स्त्री विमर्श साहित्य संबंधी विमर्श माना जाता है| भारत में स्त्री उद्धार की बातें १९ वी शताब्दी से शुरू हो जाती है| इस क्षेत्र में आर्य समाज, ब्राम्हों समाज आदि ने भी स्त्री उद्धार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया| हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श, पर्यावरण विमर्श, आदिवासी विमर्श के साथ स्त्री विमर्श के ऊपर चिंतन और मनन होने लगा है|

स्त्री विमर्श की परिभाषा- मैत्रेयी पुष्पा- "नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है|"

हिन्दी साहित्य में स्त्री संबधी रचनाएं रची गई| स्त्री रचनाकारों ने अपनी पीड़ा, अनुभव और आकांक्षा को बखूबी चित्रित किया है| स्त्री लेखन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए 'महादेवी वर्मा' जी कहती है कि, "पुरुष के लिए नारी अनुमान है परंतु नारी के लिए पुरुष अनुभव है|" हिन्दी साहित्य में स्त्रीयों ने अपने लेखन से खुद को अभिव्यक्त किया तो दूसरी ओर पुरुष रचनाकार भी स्त्री जीवन को काफी संवेदनशीलता से अपनी रचनाओमें चित्रित किया है|

'महादेवी वर्मा' जी ने अपने निबंध 'शृंखला की कड़िया' में स्त्रीयों को समानता का न्याय, परंपरागत बंधनों से मुक्ति और अपने अस्तित्व की खोज करने का प्रयास किया हैं|

'संत मीराबाई' ने १६ शताब्दी में पुरुष प्रधान समाज की परंपराओं को तोड़ दिया और भगवत भक्ति तथा प्रेम में मग्न रही|

'उषा प्रियवंदा' जी की कहानी 'छुट्टी का दिन' इसमें 'माया' नामक प्राध्यापिका के अकेलेपन का मार्मिक चित्रण किया गया है| इस कहानी में नारी के अकेलेपन की समस्या पर अधिक बल दिया गया है|

'मन्नू भण्डारी' जी ने भी महिलाओं से संबधित 'स्त्री सुबोधनी', 'ईसा के घर इंसान', 'गीत का चुंबन', 'त्रिशंकु', 'कील और कसक' आदि अनेक कहानियों में नारी से संबधित अनेक भावनाओं का चित्रण हुआ है|

'मृदुल गर्ग' जी की कहानी 'उसकी कराह' इस कहानी के माध्यम से समाज की विषम व्यवस्था में स्त्री को महत्वहीनता की दृष्टि से देखा जाता है इस विषय पर प्रकाश डाला गया है| 'ग्लेशियर से' यह कहानी एक विवाहिता मिसेस दत्ता के वैवाहिक जीवन की जड़ता को तोड़नेवाली कहानी है|

'दीप्ति खण्डेलवाल' जी के 'कडवे सच' नामक कहानी संग्रह में से अधिकांश कहानियों में पति-पत्नी के तड़कते, टूटते संबंधों को कहानी का विषय बनाया गया है| इस संग्रह में 'क्षितिज', 'मूल्य', 'शेष-अशेष', 'परिणिती', 'देह की सीता' आदि अनेक कहानियाँ है|

'मंजुल भगत' जी की 'गुलमोहर के गुच्छे' इस कहानी संग्रह में वर्तमान युगीन नारी समस्या का चित्रण किया गया है|

'मालती जोशी' जी की 'बोल री कठपुतली' कहानी में दहेज-प्रथा पर व्यंग्य किया गया है| इस कहानी में बताया गया है की दूल्हा अगर डॉक्टर, इंजीनियर, वकील हो तो दहेज की रक्कम बड़ी होती है इन सबका दुल्हन पर होनेवाला परिणाम दर्शाया है|

'अलका सरावगी' जी का 'कोई बात नहीं' इस उपन्यास में एक शारीरिक रूप से विकलांग युवा लड़के के माँ का जीवन संघर्ष चित्रित किया गया है|

'मृदुला गर्ग' जी का 'कठगुलाब' यह उपन्यास स्मिता नामक लड़की का अपने जीजा द्वारा बलात्कार होने से उसके मानसिक और शारीरिक तथा पुरुष प्रधान व्यवस्था पर व्यंग किया है|

'अनामिका' जी की 'स्त्रीयां' कविता में समाज के द्वारा स्त्री को किस प्रकार पढ़ा, देखा और सुना जाता है यह बताया है तथा स्त्री की भोगने की व्यथा को भी स्पष्ट किया है| अनामिका जी की 'बेजगह', 'तुलसी का झोला' आदि कविता में भी स्त्री संबंधी व्यथा का वर्णन किया है|

'प्रतिभा कटियार' जी की 'कामकाजी औरत' इस कविता में घर से बाहर जाकर काम करनेवाली औरतों पर चित्रित कविता है| इस कविता में कवि कहते है की –

"कितनी ही जल्दी उठें और तेजी से निपटायें काम
ऑफिस पहुँचने में देर हो ही जाती है
खिसियाई हँसी के साथ बैठती हैं अपनी सीट पर |"

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में कहानी,कविता,नाटक, उपन्यास जैसे अनेक विधाओं के माध्यम से नारी का चित्रण किया गया है|

संदर्भ ग्रंथ सूची –

* hi.m.wikibooks.org.
* हिन्दी महिला कथाकारों के साहित्य में नारी विमर्श—क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी
* 'श्रृंखला की कड़िया' -महादेवी वर्मा
* प्रतिनिधि महिला कहानियों में चित्रित नारी- डॉ. मीना जोशी, शैलजा प्रकाशन
* कोई बात नहीं – अलका सरावगी
* कठगुलाब – मृदुल गर्ग
* कामकाजी औरत- Hindwi.Org